



Joint Project of the Rajawade Sanahdhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

11911

1

11911

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीत्तत्त्वानाश्येनमः ॥ जयजय कंदरावनवीला  
 सीणी ॥ आदिमोयचिमुक्तेस्वाभिर्णी ॥ संनकादि कांचेहृदयसु  
 वणि ॥ तुंभवायीराहृस्मि ॥ १ ॥ कामक्रोधः भाषीवार ॥ हेची  
 श्रंकज्ञायीनिश्चमद्दुष्मास्तु ॥ ज्ञाहुंकारहास्यशास्तुर ॥ करि  
 संक्षारयेयाचा ॥ २ ॥ ब्रां नावी भाषीतह ॥ शैषवस्तुमीवाच्य  
 हिपुरंधर ॥ पुनर्णगास्त्रे ग्र ॥ तुंजेगाद्युनाचती ॥ ३ ॥ व्या  
 सवाल्लीकवामदवकुक ॥ ४ ॥ नंदस्तु दबलिकिमादिक ॥ हेदि  
 वेटचिप्रकाशक ॥ जणीसीमागत्ताविती ॥ ५ ॥ तुंकेवव्युपदकन  
 कल्लिका ॥ जानंदरसोवरमरालिंक ॥ ज्ञेस्तानदपदद्वयका ॥  
 नीजकंकास्तुरवदेस्ती ॥ ६ ॥ मणमाहणीगकुलुवासीपी ॥ दृष्टं  
 दैसंक्षारकननी ॥ नावकंमुरलिघनजगन्मोहणी ॥ नंदस्तु  
 इनी इरवक्ष्यी ॥ ७ ॥ निराजनीघालीसी

रात्रेवादे संशोधन मंडल, धुले और त्रिश्वाले  
 द्वारा उपलब्ध किए गए अनुप्रेषित अवलोकन

हिर॥

२८

गोंदङ्कु ॥ कोंशीदिसेहनवक ॥ वक्षिघेशिय्येयांची ॥ ७ ॥ तेंचतुष्टं  
 वेपसीमातीरि ॥ समपदसमकरसमनेत्री ॥ वाठपाहासीजोहोना  
 त्री ॥ नीजस्तकांचीपंडरिये ॥ ८ ॥ तेरोवंभाघ्यायसंपतायेथे  
 रामतपधरिलेंघट्टानाये ॥ जासुरासुरप्रकंजयासुते ॥ येउ  
 नीयोसेव्हारिला ॥ ९ ॥ तेसजायतपायकलयी ॥ जेंजंपाहोज  
 येनयेणी ॥ पंचस्ताच ॥ अंगी ॥ घट्टासुरपदिसती ॥ १० ॥  
 हंउपीदेतवीडीयाकरण ॥ वाप्राहंवीडीउकलुनी ॥ तोंसा  
 जिदिसेचकपाणी ॥ हाककाणुनीवीडीगकी ॥ ११ ॥ घणांता  
 बोळांतमेवउनीघट्टा ॥ माजीदीघलादुवाजाणाण्डी ॥ येउ  
 पाहासीमाझप्राया ॥ वात्रुपूर्णजालीसी ॥ १२ ॥ जोसाईकड  
 गोकुछी ॥ वनासीचालीलावनमालि ॥ कोंवतीगोपाळांचीमंड

तो



The Rajavade School of  
Shodhan Mandal, Dhule and  
Keshwari Chavan Pratishthan  
located in Neueda

॥२॥

लिं ॥ नानावोदेंवाजवीती ॥ १३ ॥ लागतं मुरववायोचेंबक  
 पावेंवाजतीजातीरस्ताक ॥ चुमरिम्टहंगठाक ॥ गातीगोपक  
 स्वानंदे ॥ १४ ॥ पुवितपभाक्त्वरिलेंवहुवस ॥ धन्यधन्यतो  
 चीवेश ॥ स्वज्ञाधनिरसावीलास ॥ धनरणीवाजवीसर्वद्वा ॥ १५  
 कमेक्षेहुनीतपमोटां ॥ वेठ आचर उष्णहुंतवोट ॥ तरिभाधरि  
 धरिलावकुंवें ॥ सहात संक्षेप ॥ १६ ॥ हरिन्यागच्छास  
 वनमाग ॥ जापदलं बीर्ण ॥ त्रुज्याशाका ॥ सहासर्वहापड  
 लीगकां ॥ देशउपजलाकनकनी ॥ १७ ॥ त्येणमीचरणीना  
 हिलें ॥ ईणजापादहरितं आवरीले ॥ हेनसुटचीकहाका  
 क्षे ॥ जलिबेलेंबहावीलि ॥ १८ ॥ हेनिधरिनानाजावतान् ॥  
 हेगचांचिनक्षेंचीदुर ॥ ईचाकीतीकरावामछर ॥ जालीवीय

॥२॥

३

सी

करत्वद्योते ॥१९॥ पड़ली हेन सुटे गको ॥ मगती सीने हवाठविक  
 मला ॥ उणगंपीर संवका ॥ हाथी सवीती ब्रीतीने ॥२०॥ घन्यतो हाह  
 स्तीचावेत्र ॥ घेउणि हिडंराजीयतन ॥ घन्यतो शिरिविसाचार ॥ पि  
 छें श्रीधरशीरिवोह ॥२१॥ ईकडमा मथुरचंवर्तमान ॥ कैंशाचिंत  
 क्रातरात्रिदिन ॥ तो अद्युग ॥ सुरवात ॥ न ॥ लयमिगीचिन वातं उज्जा  
 ॥२२॥ कैंशोगोरवीलादुराचार ॥ नावतीयत असुर ॥ होउणविरा  
 ल अद्युजगर ॥ आसंसाव्यपर ॥ ॥२३॥ शातयोजणलंबायमाण  
 पर्वतांकार दिसदुरण ॥ द्वादश गाव मुरव पसकण ॥ पडीलाज्ञसंज  
 रंगतो ॥२४॥ जैसिन गम्ट गतीहृषण बंडुत ॥ तैसव छिन श्यासुर दंत  
 गागोपजांत्रवशत ॥ पर्वतदरिश्यणउनीयां ॥२५॥ मागंदुरावलोश्री  
 धर ॥ पुठेंगेलीगाईचिमोहर ॥ नवलद्वंगोपाल समग्र ॥ मुरवामाजी

१३॥

सचरले ॥ २८ ॥ दुरिताहिलागोपात्तु ॥ पुढीद्वयोडवेलंसवत् ॥ मत  
 वद्धकृघणनिक ॥ जायोनिअंतरब्रवेशला ॥ २७ ॥ पुर्वकिाच्चियाम  
 दिलाथोर ॥ याहुणिविशाक हाम्रजगर ॥ गोगोपात्तुहितमुर  
 हर ॥ मुरवीयाच्चाप्रवेषले ॥ २८ ॥ ब्रवेशले जायुनीसमग्र ॥ चापा  
 उंमेहविजूगसुर ॥ जाकेदतीग ॥ २९ ॥ त्रकृयथोरमंडिला ॥ २९ ॥  
 गोडध्यपतीनारायण ॥ आत ॥ ३० ॥ त्रावरागवंभाहाजाग्न ॥ दु  
 लागोवधनि ॥ मत्तजन्तरकृष्ट ॥ ३० ॥ द्वावरागवंभाहाजाग्न ॥ दु  
 वंगीक्षिलानलागतांश्चण ॥ यथा हुत्तरक्षीसीपुर्ण ॥ अनवसाजोहं  
 वासी ॥ ३१ ॥ सीहंसरवाजलापुरतां ॥ मगकावनीनीभयहीउतां  
 चरियेउनीवेसठासवीतां ॥ कायेसीनीतां दिपाची ॥ ३२ ॥ ज्ञेसे

१३॥

जेसेवोलतागोपाहु ॥ भक्तुपचलुतोतमाहनीकु ॥ छपैयो  
 इवलादयालु ॥ जालावीशाक्तेतंसमई ॥ ३६ ॥ द्वादशायुजेषुत्तुमुख  
 साहुनउच्चजालारमानायक ॥ उमाचिमाजगरदेव ॥ चीरिलातकुंगो  
 विंदे ॥ ३७ ॥ जेसाशुस्कष्टपुत्रुगरं यकाचघाईउकाचिरे ॥ कीपद्मा  
 डीतानिकरे ॥ वेळकहिनल ॥ ३८ ॥ तैसउकाचिमाडिलाजाघा  
 सुर ॥ सोडविला गोगोपछाच ॥ ३९ ॥ गगणीपुष्पेव हिन्दुरवर् ॥ वा  
 रंवारंकनिताती ॥ ३१ ॥ जास्ताजाताचउत्तर ॥ गेकुवापरतला  
 परमसुर ॥ नंदहिगोक्षियेशोदरी ॥ सामाचान कल्लाहो ॥ ३१ ॥  
 आश्चर्यवाटलेसक्ष्योग ॥ अग्रगासुरनिभालं ॥ ३८ ॥ मगपाठवी  
 लाधनुकासुर ॥ माहाकोधीदुराचार ॥ तडवनातजासुर ब्रह्म

गे

हिउधीणीवैसला॥३९॥ तेंजायोनीगोविदें॥ तीकडेचचालेवी  
लिंगोव्रेद॥ ताडवनासमुकुदें॥ नानावीधरवकरवेळे॥४०॥ ता  
उलगलेंदारबहुंत॥ माजीधेनुकासुरगजीत॥ गोपजालेंभयाभीत  
हरिमुखवीलोकीत॥४१॥ देयाचात्कर्मजाह्नुत॥ श्रेष्ठेचकलिमा  
हापवत॥ होकेनिराकर्गजीत  
नकरघननीठिं॥ होस्ति द्विनुंक  
रथीबेळें॥ हरिवरिधावीश्वल  
जैसाध्यावत॥ कीहीरथेकरथपवर्षवहुत॥ नरहरिवरिकाशिठ  
॥४२॥ तेसाध्यनुकासुरधावीनिला॥ श्रीहरिन्द्र्याभांगीमीसव्वला  
होणीश्वरेतेवेळो॥ रमानाथधरियेली॥४३॥ उलधानिसुमी

१४॥  
२  
३

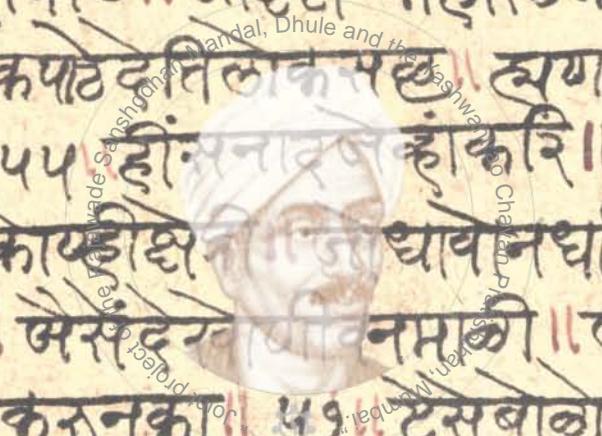


वरिपाडीला ॥ सेवेचित्तवस्तुतिधावीनला ॥ मगश्रीस्त्रियोन्नरथीध  
 रियला ॥ क्षोवंडिलागरगरा ॥ ४६ ॥ जाफ़क्षिलासबहूबले ॥ गतःप्राण  
 जालातेवेळे ॥ दिव्यसुमेनवर्षेयेळे ॥ वंदादकेवेद्यवं ॥ ४७ ॥ जैसाजाहुंतक  
 रथपुत्रघार्थ ॥ गोपासहितप्रवलंवकेटनाथ ॥ केसासकहुलावंतात  
 घेनुकासुरनीमाला ॥ ४८ ॥ म.प.प्रभुपापि कशीआलुंर ॥ उभाराहीला  
 कंसासमोर ॥ द्यणेगोकुलासंकु ॥ रथमात्रेकरिणमि ॥ ४९ ॥ माशीया  
 व्रतापांडुढे ॥ देवपहुतिहाउया ॥ ५० ॥ द्यष्टावलिरामकेहुडे ॥ मारा  
 वायांजासंका ॥ ५१ ॥ मीकोपतांविरकरी ॥ पहुतिदणमणीज्ञाणशाषि  
 आसेओकतांकेसामानसी ॥ परमसंतोषवाटला ॥ ५२ ॥ वरस्त्रेंभुषणेदिघ  
 लिंदासी ॥ गोकुलोचालिलोदेलकेरी ॥ ज्ञानवर्तपधरथवगरसी ॥ घो  
 शाप्रदेसीपातला ॥ ५३ ॥

6  
तवाजतीतेहांसबहू॥ इननीलेंउविमंडल॥ देवींवीमानेसकहु॥  
पविलिंहोतेधवं॥ ५३॥ पर्वताकानसबहृवहि॥ गोकुहृभावेतंक्षेपे  
ली॥ औस्ताकोण्हीनाहींवलि॥ जोदृष्टीन्याहालिंतयासी॥ ५४॥ गोकुहि  
जा आलाहृकोलाल्यु॥ कपठेदतिलाक्सरहु॥ द्यथतिभातांतुरस्तोगोकुहु  
प्रक्षयकालुपावला॥ ५५॥ हींसनारजहाकहि॥ अरथरिसकलधर  
त्री॥ औस्तावीरनहिकाएहिश्च  
हाकजालीगोकुलिं॥ औस्तदर  
नमाली॥ अद्रमयंदिघलेंतयेव  
लिं॥ द्यर्णचिंताकाहिकरनका॥ ५६॥ टसबोवाणराजीवनयण॥ मातां  
गवरिधावेंपंचानण॥ कींउशावरिविष्णुवहण॥ नसावरतसंपावे  
५७॥ किराद्यसावरिनीरालाह्मपसुत॥ धावेजेसाजदकस्मात॥ खाल  
प्रकारंदिनानाय॥ केशियावरिधावीनला॥ ५८॥

।५॥

॥५॥



धावेनधरितयासि॥ ५९॥ येक

नमाली॥ अद्रमयंदिघलेंतयेव

लिं॥ द्यर्णचिंताकाहिकरनका॥ ५६॥ टसबोवाणराजीवनयण॥ मातां

गवरिधावेंपंचानण॥ कींउशावरिविष्णुवहण॥ नसावरतसंपावे

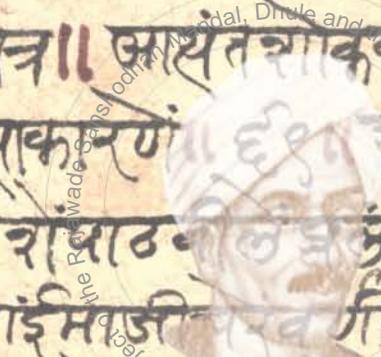
५७॥ किराद्यसावरिनीरालाह्मपसुत॥ धावेजेसाजदकस्मात॥ खाल

प्रकारंदिनानाय॥ केशियावरिधावीनला॥ ५८॥

६५ केरीनेदेवीलालामसुदर ॥ कोम्हंगनवपंकजेनेत्र ॥ अणहाच  
 मुरक्षेशतुंसाचार ॥ देयसंकारकेलायाण ॥ ६० ॥ छचोधावानीतेवेळं  
 आकस्मात्चरणीधरिलो ॥ कोवडानिकीरकावीला येनसरसावीला  
 सवचिं ॥ ६१ ॥ विशाल्लमुखपसरिलें ॥ हरिसगीचिन्मणेंसगवें ॥ चर  
 णिधरणीतेवेळं ॥ पुठतिघ्नकाटक इ ॥ ६२ ॥ पर्वतांकारसबृघा  
 उ ॥ कोधेकरकरवायेत्था ॥ ज तहि चापवाडा ॥ त्रीदशोनत्री  
 वीलोकीति ॥ ६३ ॥ भाउतीसरलालारामवीला ॥ हरिनेरगुनमुंग  
 पीकीला ॥ सवेहस्तेवेळं ॥ मुखीघातलायद्विन ॥ ६४ ॥ कक्षेप  
 रियंतहांत ॥ घातलीतेकंजगंनाय ॥ जेसालोहुगोक्कोज्ञतीतप्र ॥ तेसा  
 जालीतज्ञतरि ॥ ६५ ॥ जीक्षात्याचिपीक्षायि ॥ बोहरकाढिलीउपडान  
 देसेनेत्रवाटारणी ॥ यजीलेप्राणतेथेंचि ॥ ६६ ॥

Joint Project of  
Santawade Sanskriti Mandali, Shule and the  
Kashwantra Pratisandhi Members

मुरवीं हुन अद्वितीयामुर ॥ मउ मउ वाहुं आणी वार ॥ विमाणी बांह  
लेसु वर ॥ सुमणे अपार वर्षति ॥ ८७ ॥ गेला कोंसास समाचार ॥ इणा  
स मुकलो के शीवीर ॥ घरणी वरि दशानि ॥ कोंशो धान ले तेधवा ॥ ८८ ॥  
जैसा पठलियां घट श्राव ॥ आसत शाक वरि दशावगत ॥ तेसा व्यक्तु  
कोंशी सुर ॥ के शीदेत्याकारण ॥ ग्राउपरियो के दीवसी ॥ गाँड़चा  
रितां हृषि कोंशी ॥ कंशो पाठ ॥ उवासि ॥ कपट वेशी हुरासा ॥ ८९ ॥  
ब्रह्म जवेद्याधनयी ॥ गाँड़साजि ॥ ग्राम देवो जवेमणी ॥ हेरि  
केडं पाहुनीयां ॥ ९० ॥ एंगेत शासना तेवां ॥ श्रीद्वच्छावरि धविन  
ला ॥ दैत्य कपट वेशी कहुला ॥ श्रीनं गासीं तेधवा ॥ ९१ ॥ धरणीयाह  
एही एंग ॥ मवडुंनी जापटी लाश्रीनं गे ॥ जैसा पठक कै केन सचुरहाय



ग्रन्थालय  
प्रधान  
प्रसाद  
प्रभाती

सवेगं ॥ उविवरिभापवीतो ॥ ७३ ॥ चुरजारेशनिर ॥ ब्राह्मसिमुक्तलाभूतु  
 र ॥ कब्लाकंसाससमाचार ॥ ब्रह्मलंबपरन्पावला ॥ ७४ ॥ यउपरियेकदी  
 णि ॥ निराजाश्चन्द्राद्विग्नियामिषि ॥ ब्रह्मिरामजाणीचक्रपाणी ॥ वंसंतवणी  
 रवेक्षति ॥ ७५ ॥ गोपललनासमवत ॥ कब्लयमद्विनवनीरवेक्षत ॥ तोशंनवचु  
 डदेय ॥ यालंहृष्टेतेधवां ॥ ७६ ॥ गोपललनासमवत ॥ ययद्वपुत्वाणि ॥ गोवृष्टद्विन  
 ठहृष्टेजणी ॥ गाँईजैसीचक्षणि ॥ गवनीकरितैति ॥ ७७ ॥ हेकुष्टराचे  
 सेवक ॥ माहाकपटिहृष्टहृष्टवं ॥ स्थृष्टपाकडितिहाक ॥ ब्रजनायकजै  
 कतसं ॥ ७८ ॥ ब्रह्मिरामान्धिष्ठयेणमुरहर ॥ गाइधनपनितोव्याघ्र ॥ तदिच  
 बाहुतीवारंवार ॥ करणास्वेरेकनाणीयो ॥ ७९ ॥ ज्येष्ठेबोलोयीकमहाना  
 येके ॥ गोव्रासृणव्रतीपाण्ठके ॥ परमपुरेषभक्तवारके ॥ तांडियसु



"Rajendra Singh Odhan Mantri Dhul and the Yashoda Project" - "Digitized Manuscript Number" - "Digitized Manuscript Number"

उपडीलं ॥८०॥ पात्रीतरथा मुद्धरभ्यावतार ॥ तेणे उपडिलान्निंदत्तस्तव  
र ॥ वृत्तेन्द्रधावीलमाहवीर ॥ गौरहस्यणाकारण ॥ ८१ ॥ तोंतरोधकापठवंसि  
पश्चतें जालेवेगनसी ॥ रामअरथीटुषीकेशी ॥ मूर्नावेगंधाविनलं ॥ ८२ ॥  
तोंतंगोवषदाकीनि ॥ व्याघ्रहात्पिवगपठति ॥ द्रोषहरिनसोडती  
याठिलागतीतयोचं ॥ ८३ ॥ मातृत्वात्प्राप्तिराधजण ॥ व्याघ्रवषहिरकु  
ण ॥ माहाभयासुररप्यन्तथा ॥ ८४ ॥ नगमस्त  
कीपेडेवज्य ॥ तेसंदोधमावक ॥ तन्धात्तं चतोकेलेनुर् ॥ ह्यणमा  
त्रेनलागतां ॥ ८५ ॥ दोधाचं दिन्दुवुडुनी ॥ चेत्तनीन्वालिलेतोद्धयि  
वीजईहोउन्द्रामन्वक्रयायी ॥ पुर्वेस्त्तेलापावल्लौ ॥ ८६ ॥ स्यावरिजा  
लीयेकाहसी ॥ जेष्ठीयेपरमनिजमाकांसी ॥ तवमा ॥ रववमागदसत्

॥८१॥



॥३२॥१४॥

विज

रासी ॥ पुवी उद्धरिलातो जिचणी ॥ ८७ ॥ हरिस्थनुपयकादवी ॥ नंदवृत्तत  
तेहिवसी ॥ जायथा जालें सवंसी ॥ सदलीनी सीसहर ॥ ८८ ॥ दुसरें हीव  
सीदादसी पोहिं ॥ नंदउठीलाया रथा इवी ॥ येमुनुजातीनातंसमई ॥ न्नाना  
लागीपातला ॥ ८९ ॥ जो जब पती मुखवक्षण ॥ याचेदुतरहीतिजानुदीन  
जाकुलिजे जकीनिघतिजाए ॥ ९० ॥ जायीमणीतचि  
तिवरण ॥ श्रीहरष्ण हायादिनान् ॥ किअशान्तपंजालात्सैसगुण ॥ पा  
होंलिकातयाचि ॥ ९१ ॥ हरिचापह ॥ नंत ॥ रसाधीपतिहोतजपत ॥ तों  
दुते  
जाकुणोदर्शनंदजाकसंत ॥ येमुणाश्रानासपातला ॥ ९२ ॥ नंदकरितां जाह  
मरनि ॥ वर्णनें नंदनलावोदुन ॥ गोलापातहासेघउया ॥ वर्णणापाहरिं तेघ  
वं ॥ ९३ ॥ यावनिगोकुलिकायेजालीकरणी ॥ उदयाद्वीवरिष्यालातरणी

*Digitized by Samsodhan Mandal, Bhuj and the Yashwantrao  
Rajput Library, Bhuj  
Digitized by Samsodhan Mandal, Bhuj and the Yashwantrao  
Rajput Library, Bhuj*

येशोहवाठ पोहेसरणी॥ येणधरधनीनयेतिकं॥ १४॥ तोहाकगवांतजा  
ली॥ नंदबुडालायमुण्डाजचि॥ चहुकेडानिधाविलंगाकि॥ येशोदाभाली  
लवलोहं॥ १५॥ येमुण्डातिरसयनणी॥ व्यस्तस्थैषपिठिनंदराणी॥ सुर्धे  
गतपउलीधरणी॥ शोकेंकाळणीवीक्षणा॥ १६॥ गौक्षिसंचरलेजचि॥  
येकपसरतीज्ञानदजाली॥ येकथुकि इतिकी॥ शाधघर्वीनंदान्ना॥ १७॥  
येशोदांशोकदत्तहांका॥ अधानेद  
नपाहका॥ व्राण्डीयंसुनवहायका  
कोठंपातांपाहोंदुते॥ १८॥ कालेज्ञान-हरयकास्मी॥ नंदजीतुंभीनी  
वनिउपवासी॥ आजीपरणंकरावयास्मी॥ कावंगलंनकहुते॥ १९॥  
ज्येष्ठामायाकरितंशोक॥ जवक्षिजालवैकुंठनायेक॥ जोक्कपलुभवा  
कहारक॥ मातोघतिवालतसं॥ २०॥

शोकनकरावात्वतो ॥ याचंक्षुषीभाणीतेपिता ॥ हनतांतसीसीक्षालविन  
 जाता ॥ करणीकिरितावीपुरित ॥ १ ॥ असेवोलान्तांतडी ॥ येमुणाजीवणीदा  
 तलीउडी ॥ चुहैचोलाकीकडोविकडी ॥ साडावेद्रलाश्रीरेगे ॥ २ ॥ पुर्वकि  
 लेगोवधनोधरण ॥ द्वादशाभावंगीलि लाभान् ॥ तोपुत्रार्थसंपुर्ण ॥ माय  
 सीमणीजाववीलं ॥ ३ ॥ कालिया ॥ ४ ॥ करीभानिलाहन्त्यंसप्तहर ॥ न  
 हासंजाणीलहाद्वीचान ॥ मणी ॥ ५ ॥ सकलेगोकुलिचंजणयेती  
 कालिदीतरिंतटस्तावेसती ॥ ६ ॥ तंवसामीवती ॥ निरींबीणिगोकुलि  
 च्या ॥ ७ ॥ व्यणरीयेमुन्देतलीजाहुतो ॥ लोकधतांतसगयिम्पती ॥ तेस  
 वीच्यांवहती ॥ येसेवोलतीवजजणी ॥ ८ ॥ जासैइकेडेवस्यालोकांत्रि  
 संतरेगलाक्षीराक्षीचापती ॥ ९ ॥ दुतसंगतीरसाधीपरी ॥ श्रीहन्त्यापुर्णक्ष्य  
 कला ॥ १० ॥ इष्णोजाकीलब्रह्मांड ॥ श्रीहन्त्यापत्तापन्तुयेत्रंचंड ॥ तोपुर्ण

the Padayatra Sanskrit Mandal Bhule and the  
 Joint Project of the Padayatra Sanskrit Mandal  
 and the International Sanskrit Pratishiksha  
 Number

व्रत्यानंद अदूरवंड ॥ करिल दंड कलंते ॥ ८ ॥ सथाकी तजाला वन् थ ॥ बोहे  
र जाला ध्यावान ॥ धारले द्वस्था सिंलोटां गया ॥ येणं शरण जान्येन मि ॥ ९ ॥  
दुषुप्त्रिसंहीनानाथ ॥ म्यानेणोनीपाहीलाभंत ॥ दुष्पाकुलशमीकात ॥ स  
माकरिजांन्योयहा ॥ १० ॥ पुराणपुरुषातमा जुवणचालका ॥ दुभागोन्नरव्र  
स्मादिका ॥ येणो वोजे गुकुलपालका ॥ दर्शिण नज दिघले ॥ ११ ॥ जामुणि सा  
कास हीत उपचार ॥ जावडि पुज करधर ॥ नमस्कार धालु नियाव  
रं चार ॥ सगयदुवीर बोलत ॥ १२ ॥ वेद्यथाग जुलानी ॥ गेलानिज अ  
रूपवीक्षणीनि ॥ जातांद हाकीमान दाकुनि ॥ सदासमरणीरा हावे ॥ १३ ॥  
जाइ आवहुनीत वक्ता ॥ नंदहरिस जानुनि दिघला ॥ वेगं श्रीरंगपरतला  
येतां जाला गाकुला ॥ १४ ॥ नीशीसंपत्तां उगवला चंडांश ॥ तैस येषु नेजका  
तुंन परम पुरुष ॥ नंदसम वेत जाला हरष ॥ परम जाला व जाते ॥ १५ ॥

१०

११

॥ अथात् ॥

वेगं प्रमद्यां विनलीमाया ॥ स्वेण हरि निज द्वाया सरवया ॥ श्री रंग मास्या विसं  
विद्यां ॥ काये होउ उतीर्ण ॥ १६३ ॥ हरि हें शरि र वो वाहु पि ॥ कुनवंडी करि ण  
तु जवरंणि ॥ बहुंतासंकटी रक्षी लेचक पापि ॥ काये बण उण आवउ  
१७ ॥ जासेन वास मोटले गोहि ॥ डमंजा कुंगी लावन माछि ॥ वाद्य लागली  
तेकाछि ॥ वेग आलामं दिरा ॥ १८ ॥ नेहु उ ग हक लोथार ॥ भुशु रांदी धोलं व  
स्वं जाकं कार ॥ जानंद लं गुद ॥ १९ ॥ रमावर ब्रह्मादं ॥ १९ ॥ संगात  
धुं न जगदानंद कंद ॥ को जवनि धि ॥ रिनंद ॥ २० ॥ तेलम ईचा ज्रबां नंद ॥  
कवणवर्णु रकेप ॥ २० ॥ याउपरियक हावन्पी ॥ नंद निधे शकि वनाचि ॥ द  
वीचीया त्रो दिवसि ॥ सर्व ब्रज वासी निधा ल ॥ २१ ॥ येचासि हित गोकृ  
षि ॥ हहि दुर्घट तलोणि ॥ सामुग्री चंगाउं परु पि ॥ तेज्जपि नीघोल ॥ २२ ॥  
षडुरस जान सुंदर ॥ साचे हीरा करभरि लें समग्र ॥ याज्राचालीली जा

१०४

८

पारं वाद योग जरहोतसा ॥ २३ ॥ मैदूना हर वाली वन ॥ जेथं वीक्षा म पोवं शक्ता  
चेमन ॥ वह से दिते गेल गगण ॥ न दिस कीर्ण सुय चिं ॥ २४ ॥ जां ब्रकं द बजे  
दं बर ॥ के लिनार के लिअं जीर ॥ योफलि दालं दी द्वच्छागर ॥ महयागर चंद  
न ॥ २५ ॥ चोपमोगर कांचण ॥ जाइ जं दरात जण ॥ बकुच रात पत्र कमलं पु  
णी ॥ वीकाश लिं साजीरि ॥ २६ ॥ उ लाजीरि ॥ न वाली सकल जणो तेवहं पुजी।  
ति ॥ लोकी तेहि वन्सि के लिवर्सी ॥ कुं द्रीतिये ॥ २७ ॥ रजगिहाणध  
हर जाली ॥ निहार्ण वीजावधी बुड ॥ तोमाहान पते वेलि ॥ न दाजवलि  
पातला ॥ २८ ॥ कमलापती तेवका ॥ बुटपहुडला ॥ तवतो जाजं गर  
घावीनला ॥ गीकुलागला नंदोत ॥ २९ ॥ न द जाक्रो शो हाकाफो डीता ॥ त्येण  
घावां घावां होसमस्त ॥ सर्वे गमि छिलं कंठापर्यत ॥ द्वच्छानाध वामज ॥ ३० ॥  
जाठ हास्य नंद जारडत ॥ कै वरिया हरि धोवें द्वणत ॥ तोगो निघावी



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)